9570

શ્રી
ગરસૂરિ
દિર
ીનગર

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

वर्ष : २६ अंक : १२
मार्च २००३

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २६ अंक - १२, मार्च २००३

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2238-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2238-2655. e-mail - jbhawan@ cal3.vsnl.net.in.

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनिजी	५३१
२.	आन्ध्र प्रदेश में जैन धर्म		५४०
३.	श्री चन्द्रराज चरित्र		५४६
४.	संकलन		५५८

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

पंचिंदिय सूत्र का विशेषार्थ—

इन्द्रिय- इन्द्र, जीव, अथवा आत्मा को जीने के लिये साधन, ज्ञान प्राप्त करने के साधन को इन्द्रिय कहते है।

इन्द्रिय पाँच प्रकार की है—स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोतेन्द्रिय।

(क) स्पर्शेन्द्रिय—चमड़ी के माध्यम से जो शीत, उष्ण, कर्कश, कोमल आदि स्पर्श का अनुभव करते है, उसे स्पर्शेन्द्रिय कहते है।

(ख) रसेन्द्रिय— जिसके द्वारा तिक्त, लवण, मीठा, खट्टा आदि स्वाद का अनुभव होता है, उसे रसेन्द्रिय कहते है।

(ग) घ्राणेन्द्रिय— जिसके द्वारा सुगन्ध-दुर्गन्ध का अनुभव होता है, उसे घ्राणेन्द्रिय कहते है।

(घ) चक्षुरिन्द्रिय— जिसके द्वारा रूप-रंग का अनुभव होता है, उसे चक्षुरिन्द्रिय कहते है।

(ङ) श्रोतेन्द्रिय— जिसके द्वारा सुनने की शक्ति का अनुभव हो उसे श्रोतेन्द्रिय कहते है।

नव प्रकार ब्रह्मचर्य पालन का नियम— ब्रह्म-आमा-चर्य-विचरण करना ब्रह्मचर्य।

सांसारिक विषय को भूलकर आत्मा के विषय में चिन्तन करना आत्मिक विषय में रमणता को ब्रह्मचर्य कहते है। इस ब्रह्मचर्य को अच्छी तरह पालन करने के लिए नव प्रकार के नियम पालन करना आवश्यक है।

(क) संयुक्त वसतित्याग— जहाँ पर स्त्री, नपुंसक रहता हो वहाँ सहवास न करना। विजातीय के साथ न रहना।

(ख) कथात्याग— कामभोग, स्त्री कथा, विजातीय कथात्याग।

(ग) आसन त्याग— जहाँ स्त्री बैठी हो वहाँ ४८ मिनट पुरुष और जहाँ पुरुष बैठा हो वहाँ तीन प्रहर स्त्री न बैठे।

(घ) अंगोपांग दर्शन त्याग— विजातीय का अंग उपांग न देखें।

(ङ) गृहस्थ के एक दीवार के बीच वासत्याग— जहाँ दो घर के बीच एक ही दीवार हो सांसारिक वार्तालाप सुनाई देता हो वहाँ रात्रि विश्राम नहीं करना चाहिये।

(च) पूर्वभोग स्मृति त्याग— पूर्वावस्था में जो काम भोग किया हो, उसको स्मरण न करें।

(छ) गरिष्ठ भोजन त्याग— अधिक घी, तेल युक्त भोजन न लेवे, क्यों कि अधिक गरिष्ठ भोजन करने से विकार उत्पन्न होता है।

(ज) अतिभोजन त्याग— अधिक भोजन न करें। हमेशा उणोदरी करें। अधिक भोजन करने से मानसिक विकार उत्पन्न होता है।

(झ) शरीर शोभात्याग— शरीर की शोभा न करें। क्योंकि इससे विजातीय आकर्षण होता है। मन कामुक बनता है। यहाँ पर स्त्री पुरुष के लिये और पुरुष स्त्री के लिए निमित्त कारण समझें।

कषायत्याग— कष-रस-आय–आना। जिसके द्वारा संसार की वृद्धि हो, राग-द्वेष बढ़े उसे कषाय कहते है। ये चार प्रकार के है।

(क) क्रोध— गुस्सा करना, कारण-अकारण अपना संतुलन खो बैठना। प्रिय-अप्रिय घटना से मन में क्लेश करना।

(ख) मान— अहंकार, अभिमान, अपनी योग्यता से भी अधिक स्वगौरव करना। इससे व्यक्ति गुण ग्रहण करने में असमर्थ रहता है।

(ग) माया— छल, कपट। वास्तविक को छुपाकर अवास्तविक बताना। करना कुछ और दिखाना कुछ। इससे व्यक्ति में कुटिलता बढ़ती है। माया आचरण से व्यक्ति विश्वास आदि खो बैठता है।

(घ) लोभ— लालसा, आसक्ति। आवश्यकता से अधिक पाने की इच्छा अथवा संग्रह करके रखना। अनधिकृत वस्तु को पाने की इच्छा। इससे व्यक्ति हीन बनता है।

पंचमहाव्रत—वे संयमी आत्मा का मूल नियम है। साधु को विशेषरूप में पाँच नियम पालन करना अनिवार्य है।

(क) प्राणातिपात विरमण व्रत—मन, वचन, काया से कोई भी जीव की हिंसा न करना।

(ख) मृषावाद विरमण व्रत— मन, वचन, काया से असत्य भाषण का त्याग।

(ग) अदत्तादान विरमणव्रत— मन, वचन, काया से कोई भी वस्तु चोरी का त्याग।

(घ) मैथुन विरमण व्रत— मन, वचन, काया से पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन।

(ङ) परिग्रह विरमण व्रत— संयम निर्वाह उपकरण के अतिरिक्त सभी पदार्थ का त्याग। इन व्रतों में अगर कोई भूल हो जाय तो गुरुदेव से प्रायश्चित करना।

पाँच आचारः—

(क) ज्ञानाचार— सम्यग्ज्ञान-शास्त्र पढ़े, पढ़ावे, ज्ञान की आशातना न करें। बहुमान करें। सम्यग्ज्ञान प्रचार-प्रसार के लिए प्रयत्न करें।

(ख) दर्शनाचार— सम्यग् दर्शन शुद्धि के लिए प्रयत्न करना। अन्य को दर्शन का अनुरागी बनाना। दर्शन की आशातना न करना।

(ग) चारित्राचार— सम्यग् चारित्र का पालन करना। सदाचारी बनना। अन्य को सम्यग् चारित्र का अनुरागी बनाने का प्रयत्न करना। चारित्र की आशातना न करें।

(घ) तपाचार— छः प्रकार का बाह्य और छः प्रकार का अभ्यन्तर तप है, इन तपों का यथाशक्ति पालन करें, और अन्य को भी करावें।

(ङ) वीर्याचार— आत्म विकास में हमेशा प्रयत्न करना, प्रमाद न करना, हर प्रवृत्ति उत्साह पूर्वक करना वीर्याचार है।

समिति— सम्यग् प्रकार से एकाग्र पूर्वक कार्य करने को समिति कहते है।

(क) इर्ष्या समिति— चलते फिरते समय कोई जीव मर न जाय, इसका ध्यान रखना इर्ष्या समिति है।

(ख) भाषा समिति— सम्यग् प्रकार से समझकर हित-मित-सत्य भाषा का प्रयोग करना किसी को कष्ट न हो ऐसी भाषा का प्रयोग करना मुंह के सामने मुंहपट्टी रखकर बोलना भाषा समिति है।

(ग) एषणा समिति– आवश्यकतानुसार जिनेश्वर प्रभुकी आज्ञानुसार ४२ दोषो को ध्यान में रखकर गोचरी-आहारपानी का गवेषणा करना एषणा समिति है।

(घ) आदान-भंड-मत्त निक्खेवणा समिति– कोई भी सामान लेते या रखते समय प्रमार्जन करके ही लेने-रखने की क्रिया को आदान-भंड-मत्त निक्खेवणा समिति कहते है।

(ङ) पारिष्ठापनिका समिति– फैकने जैसी वस्तु विवेक पूर्वक जहाँ जीवोत्पत्ति न हो तथा लोक निन्दा का कारण न हो वहां सावधानी पूर्वक फैकना पारिष्ठापनिक समिति है।

तीनगुप्ति :–

(क) मन गुप्ति– अशुभ विचारों से मन को रोकने की क्रिया को मन गुप्ति कहते है।

(ख) वचन गुप्ति– अप्रिय भाषा को त्यागकर प्रिय और समिति भाषा के प्रयोग को वचन गुप्ति कहते है।

(ग) कायगुप्ति– शरीर से कोई गलत कार्य न करना, शुभ कार्य में लगाये रखना कायगुप्ति है। उपरोक्त पांच समिति और तीन गुप्ति को अष्ट प्रवचन माता भी कहते है। इन आठ को इसलिए माता कहा जाता है क्यों कि ये संयम रक्षा में माता समान सहयोगी है। सामायिक पौषध करते समय श्रावक-श्राविका को भी ये अष्टप्रवचन माता का अनुसरण करना चाहिए।

३६ गुणयुक्त आचार्य को ही गुरु समझे क्यों कि आचार्य सर्वोपरि है। इसलिए उन्हें ही मुख्य गुरु के रूप में स्वीकार किया गया है। उपाध्याय और मुनि मोक्ष मार्ग की साधना में सहायक है। परन्तु गुरु के प्रति अनन्य बहुमान पूर्वक सेवा भक्ति और आज्ञा पालन करके आराधक बनना चाहिए।

कलिकाल सर्वज्ञ पूज्याचार्य हेमचन्द्र सूरीजी की सेवा करके १८ देश के राजा कुमारपाल गणधर पद की योग्यता को पायेंगे। वे आने वाले चौबीसी में प्रथम तीर्थंकर पद्मनाम स्वामी के प्रथम गणधर होगें।

गुरू वंदन विधि– श्री अरिहंत परमात्मा और सद्गुरूदेव का हमारे ऊपर महान उपकार है। उन्हीं के अपूर्व उपकार से हमारा जीवन कृतकृत्य हैं। उन्हीं के उपकार से आज हमारे जीवन में सुखचैन है। कुछ भी शुभ है, उन्हीं

की कृपा का प्रतिफल है। क्योंकि इनके निर्देशित मार्ग पर चलकर ही हमने पुण्य उपार्जन करके महान मनुष्य जन्म पाया है। जीवन के महान उपकारी व्यक्ति को कभी भूलना नहीं चाहिए। उपकारी का उपकार भूलने वाले को कृतघ्न कहते है। और उपकारी को हमेशा याद करने वाले को कृत्तज्ञ कहते है। विनय करना परमधर्म है। जैनागम श्री उत्तराध्ययन सूत्र में आराधकों को सर्वप्रथम विनय करने को दिया गया है। जो व्यक्ति को महान बनाता है सद्‌गुणी बनाता है ज्ञानी बनाता है, उन्हें गुरुदेव का विनय अवश्य करना चाहिए। वंदन करना नम्रता का प्रतीक है। वंदन करना भी गुरुदेव का सम्मान बहुमान, विनय है। अनन्तभक्ति से विनय पूर्वक गुरुवंदन करना चाहिए।

अन्य शास्त्र में गुरु की अपार महिमा का वर्णन किया गया है।

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्ति, मन्त्रमूलं गुरोर्वचः।
पूजामूलं गुरोः पादौ, मोक्ष गुरोः कृपांः।।

ध्यान का मूल गुरुमूर्ति है। मंत्र का मूल गुरुवाणी है। पूजा का मूल गुरू की सेवा ही है और मोक्ष का मूल गुरू कृपा है।

खमासमण सूत्र :–

मूल सूत्र– इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाये, निसीहि आये मत्थयेण वंदामि।

सूत्र का नाम– प्रणिपात सूत्र, पंचांग प्रणिपात सूत्र, योग वंदन सूत्र।

लौकिक प्रचलित नाम–खमासमण सूत्र।

विषय– संक्षिप्त रूप में उपकारी परमात्मा और गुरुदेव को वंदन।

शब्दार्थ–

इच्छामि- मैं इच्छा करता हूँ।

खमासमण- हे क्षमा श्रमण-क्षमा सागर।

वंदिउं- वंदन करने के लिए।

जावणिज्जाये- यथाशक्ति।

निसीहि आये- पाप कार्य का त्याग करके।

मत्थयेण- मस्तक झुकाकर मस्तक द्वारा।

वंदामि- वंदन करता हूं।

भावार्थ- हे क्षमा श्रमण! (क्षमा के सागर, मुनि, गुरुदेव) मन-वचन-काया से सभी प्रकार के पापकार्य को त्याग करके शक्ति के अनुसार मस्तक झुकाकर आपको वंदन करता हूं।

शास्त्र के अनुसार वंदन तीन प्रकार के होते है।

(क) फिट्टा वंदन (जघन्य-छोटा-सामान्य)- रास्ते में चलते-चलते वंदन। रास्ते में चलते-चलते अगर कोई साधु-साध्वी मिल जाय तो उस समय जो वंदन किया जाता है, उसे फिट्टा वंदन कहते है।

रास्ते में अगर कोई साधु-साध्वी मिल जाय तो वाहन से उतरकर जूता चप्पल उतार कर **मत्थयेण वंदामि** बोलते हुए दो हाथ जोड़कर मस्तक झुका कर वंदन करना चाहिए। बस, ट्रेन आदि से उतर कर वंदन करना संभव न हो तो, अपने स्थान से ही श्रद्धापूर्वक, मस्तक झुकाकर हाथ जोड़कर वंदन करना चाहिए। रास्ते में गुरुदेव का मिलन होने पर उक्त विधि से वंदन न करना गुरु का अविनय है।

साधर्मिक भाई, श्रावक-श्राविका मिले तो **जय जिनेन्द्र** बोलकर नमस्कार करना चाहिए।

(ख) थोभ वंदन (मध्यम वंदन)- स्थिर होकर पंचांग प्रणिपात सूत्र, इच्छाकार सूत्र तथा अब्भुट्ठिओ सूत्र से विधिवत् वंदन को थोभ वंदन कहते है।

दो हाथ, दो घुटने, मस्तक, जमीन में स्पर्श कराकर नमस्कार करने की विधि को पंचांग पणिपात नमस्कार कहते है।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाये निसीहि आये तक हाथ जोड़कर खड़े-खड़े बोलकर **मत्थयेण वन्दामि** उपरोक्त पाँच अंग जमीन में स्पर्श कराकर बोले।

गुरुदेव जब प्रसन्न हो, आसन पर बैठे हो, वन्दन करने की अनुमति दे, तभी विधिवत् वन्दना करें। जब भोजन करते हो, भोजन करने की तैयारी करते हो, कार्य में व्यस्त हो, कहीं जाने की तैयारी करते हो, सोये हो, तब वन्दन न करें।

पुरुषवर्ग साध्वी जी महाराज को मात्र **मत्थयेण वन्दामि** बोलकर फिट्टावंदन करें।

(ग) द्वादशावर्त वंदन– उत्कृष्ट गुरुवंदन। बारह आवर्तपूर्वक विधि पूर्वक बृहत् विधि वंदन को द्वादशावर्त वंदन कहते है। पदवीधारी, गणिवर्य, पन्यास, उपाध्याय, आचार्य को इस विधि से वन्दन किया जाता है। इनकी अनुपस्थिति में पोषधादि व्रतधारी श्रावक-श्राविका को स्थापनाचार्य के सन्मुख यह विधि करने का विधान है। चालु भाषा में इस वंदन विधि को **राई मुंहपत्ति** कहते है।

खमासमण सूत्र द्वारा परमात्मा, गुरुदेव और ज्ञान को वन्दन किया जाता है। अन्य देव, माता-पिता आदि को इस सूत्र द्वारा वन्दन करना निषेध है।

खमासमण सूत्र गणधर भगवन्त विरचित है, नमस्कार महामन्त्र अपोरुषेय अनादि अनन्त है।

इच्छकार सूत्र– (सुखसाता पुच्छा सूत्र)–इस सूत्र के द्वारा गुरुदेव को सुखसाता (कुशलक्षेम) पूछा जाता है।

मोक्ष का परिचय गुरुदेव कराते है। परमात्मा और ज्ञान तक पहुंचने वाले मार्ग दर्शन तारक गुरुदेव ही है। इसलिए एक अपेक्षा से गुरुदेव ही हमारे लिए महानतम तत्व है। वे हमारे आदरणीय, वंदनीय और अनुसरणीय है।

जैसे- शिक्षक बिना विद्यालय की कल्पना नहीं हो सकती है, वैसे ही गुरु बिना धर्म की कल्पना व्यर्थ है। व्यवहार में लोकाचार से कोई मिलने पर जैसे हम उनकी कुशलता पूछते है वैसे ही गुरुदेव की कुशलता इस सूत्र से पूछी जाती है। दिन में तीन वार गुरू वंदन करने का विधान है। रात्रि में प्रतिक्रमण के बाद **त्रिकाल वन्दना** बोलकर हाथ जोड़कर गुरुवंदन करना चाहिए। विधिवत् वन्दन करना रात्रि को निषेध है। इच्छकार (कुशल पृच्छा) सूत्र प्राकृतिक और अपभ्रंश भाषा में मिश्र है।

शास्त्रीय नाम– सुगुरू सुखसाता पृच्छा सूत्र।

प्रचलित नाम– इच्छकार सूत्र।

मूल सूत्र– इच्छकार-सुहराई-सुहदेवसि! सुखतप-शरीर-निराबाध-सुखसंजम यात्रा निर्वहते है जी? स्वामीसाता है जी? भात-पानी का लाभ देना जी।

इस सूत्र के द्वारा गुरुदेव को कुशल क्षेम पूछा जाता है। भोजन पानी ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की जाती है।

दिन के बारह बजे तक **सुहराई** बोला जाता है। दिन के बारह बजे के बाद **सुहराई** के स्थान पर **सुहदेवसि** का प्रयोग किया जाता है।

शब्दार्थ :–

इच्छकार– आपकी इच्छानुसार।

सुहराई– सुखपूर्वक रात्रि व्यतीत।

सुहदेवसि– सुखपूर्वक दिवस व्यतीत।

सुखतप– सुखपूर्वक तप-साधना।

शरीर निराबाध– आपका शरीर स्वस्थ है तो? सुखसंयम जाता निर्वहते हो जी–संयम यात्रा सुखपूर्वक निर्वाह हो रही है तो ?

स्वामीसाता है जी– हे गुरुदेव! आप सुख-शांति में है।

भात-पानी का लाभ देनाजी– कृपा करके हमारे घर से आहार पानी अवश्य ग्रहण करें और हमें उपकृत करें।

भावार्थ– हे गुरुदेव! आपकी इच्छा हो तो पूछता हूं कि रात्रि कुशलता पूर्वक बीती होगी? दिन कुशलता पूर्वक बीता होगा? तपस्या में शांति होगी? शरीर रोग रहित होगा? आपकी संयम यात्रा सुखपूर्वक चल रही होगी? आप कुशल होगे? अनुग्रह करके आहार-पानी का लाभ अवश्य देवे जी।

विवेचन– जैन शासन में गुरुपद की महिमा अपार है। परमात्मा भाषित अध्यात्म धर्म तत्त्व उनके द्वारा ही हम तक पहुँचाया गया है। अज्ञान रूपी अन्धकार इनके द्वारा ही दूर होता है। संसार की वास्तविकता कर्म प्रकृति की ताण्डव लीला का वास्तविक रूप इन्ही के द्वारा जानने को मिलता है। इतना ही नहीं विश्व का सर्वोच्च पद-तीर्थंकर पद भी इनके द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

इस काल के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान पूर्वजीवन धनासार्थवाह के भव में आ. धर्मघोष सूरिजी के सहवास में आकर अरिहंत बनने की योग्यता को प्राप्त किये थे। और हमारे चरम तीर्थाधिपति भगवान् महावीर स्वामी तीर्थंकर बनने से २६ भव पूर्व नयसार के भव में मुनि की सेवा करके अरिहंत की योग्यता को प्राप्त किये थे। इतिहास से ज्ञात होता है कि गुरू के आधार पर ही व्यक्ति सफलता के सर्वोच्च शिखर पर चढ़े है। फिर वह सफलता भौतिक हो या अध्यात्मिक। सवा लाख चैत्य और सवा करोड़ जिन

बिम्ब स्थापक सम्राट सम्पत्ति को आचार्य सुहस्ति सूरिजी मिले। १६ देश में अहिंसा के संदेश वाहक को कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्र सूरि मिले। क्रूर-हिंसक मुगल बादशाह अकबर को आचार्य हीर सूरि मिले तो वे अहिंसक बन गये महान सिकन्दर को अरस्तु मिले।

गुरू माता है, गुरू पिता है, गुरू मित्र है, गुरू भाई है, गुरू देवों के भी देव है, गुरू दीपक है। गु-अन्धकार, रू-प्रकाश। जो अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाय उसे गुरू कहते है।

जब हम **स्वामी साता है जी** पूछते है, तब गुरुदेव कहते है **देवगुरूपसाय** इसका अर्थ है परम तारक परमात्मा और संयमदाता गुरुदेव की असीम कृपासे आनन्द मंगल है। यानि जीवन जो कुछ भी है उन्हीं की कृपा से मिला हुआ है। यहाँ अहंकार का कोई स्थान नहीं है, कितनी सरलता, नम्रता, कृतज्ञता है कि अपने सभी क्रिया कलाप का भार उन पूज्यो पर छोड़ दिया गया है। यहाँ पर स्वकृतित्व का कोई भाव नहीं है।

अपार सम्मत्ति का स्वामी जिन्हें रोज देवता द्वारा अमूल्य आभूषण से नित्य भोज्य पदार्थ भेजा जाता था, ऐसे शालीभद्र को राजगृही नगरी के राजा श्रेणिक एक बार स्वयं मिलने गये और उनसे पूछा कैसे है? तो उत्तर में शालीभद्र कहे **देवगुरुपसाय** ये शब्द है समर्पण और लघुता। आज तो हम छोटा-छोटा कार्य करने में स्वयं को बहुत बड़ा समझते है। और अहंकार से मदमस्त होकर औचित्य को भी भूल जाते है। आज के मानव समाज में समर्पण न होने से अहंकार 'मैं' पन का साम्राज्य बढ़ाता जा रहा है। परिणाम स्वरूप आज समाज में कलह के कारण बिखराव पैदा हो गया है। जगह-जगह संघर्ष हो रहा है, फिर धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक या शैक्षणिक क्षेत्र क्यों न हो, कोई भी स्थान अछूता नहीं रह गया है। फल स्वरूप हर क्षेत्र में विकास की गति प्रायः रुक गई है।

क्रमशः

आंध्र प्रदेश में जैन धर्म

कल्याणी चालुक्य काल : जब राष्ट्रकूटों ने बादामी चालुक्यों को पराजित कर ८वीं शताब्दी में अपना राज्य सुदृढ़ कर लिया, उस समय में चालुक्य पूरी तरह समाप्त नहीं हुए। वे सामंत के रूप में अन्निगेरी में शासन चलाते थे और यह स्थिति ९७३ ई० तक बनी रही। राष्ट्रकूट की शक्ति कमजोर होती गई और ऐसी स्थिति में राष्ट्रकूटों के अंतिम राजा को मार कर पुनः पूर्णतः स्वतंत्रता हासिल कर ली। इस महान विजय का अधिनायक तैलप द्वितीय था। उन्होंने पहले राष्ट्रकूटों के अधीन जितने राज्य थे उन सभी को जीतकर अपने अधिकार में कर लिया। चालुक्य जैनों के हिमायती थे। अतएव उन्हें इस नए शासन में अपना कार्य करने में कोई असुविधा नहीं हुई।

पोतलसेरुवु (वर्तमान पतनसेरु) जो हैदराबाद से १६ मील पश्चिम में स्थित है जैनों के प्रभाव का एक प्रमुख केन्द्र था। आज भी यहाँ कई जैन मन्दिर और मूर्तियां पाई जाती हैं। ये यत्र-तत्र भग्नावस्था में हैं। ऐसा लगता है कि वर्धमानपुर (वर्तमान वड्डामणि) में भी कुछ मंदिरों का निर्माण जैनों ने किया था।

वर्धमानपुर से पश्चिम को चलकर हम पेदतुमबलम् पहुंचते हैं। वहाँ जो बसती है और उसके समीप का गाँव चिन्ना तम्बलम् काफी विकसित है। वहां एक सामान्य सीढ़ी द्वारा एक पिरामिडनुमा मंदिर है। यह अपने चारों तरफ बने भवनों में दबा-दुबका सा है। इसकी दीवारों से सटकर ही ये भवनें इन्हें इस हालत में रहने को मानों विवश कर दी है। सड़क के किनारे एक जैन मूर्ति का बड़ा सा सिर मिलता है जिसके चारों तरफ अंगूठी की शक्ल की पट्टी है। शायद वीर शैवों के क्रोध का नतीजा है कि यह सिर बदहाली की इस स्थिति में है। हाल ही में खुदाई से काले पत्थर की एक चिकनी सी मूर्ति मिली है जो पार्श्वनाथ की है। पश्चिमी चालुक्य राजाओं के शासनकाल में गढ़वाल के समीप पुदुर भी जैनों का एक प्रमुख केन्द्र था। परन्तु आज बहुत कम जैन मूर्तियाँ ही देखने को मिलती हैं।

बहमनी और विजयनगर के समय में अदोनी काफी प्रसिद्ध था। परन्तु बड़ा किला जाने के मार्ग में पहाड़ियों पर बने जैन स्थापत्य राष्ट्रकूट राजाओं के समय के बने हुए प्रतीत होते हैं। पहाड़ी टीले पर पंक्तिबद्ध रूप में तीन जैन मूर्तियों की बनावट की सुन्दरता हनुमानकोंडा की पंक्तिबद्ध मूर्तियों की याद ताजा कर देती है। जैनगुफा के प्रवेशमुख की अलौकिक छटा है। गुफा के अन्दर एक हरी-भरी पहाड़ी टीले पर पार्श्वनाथ की खड़ी मूर्ति मनमोहक है और उनकी दाईं तरफ दो जिन मूर्तियाँ हैं। पार्श्वनाथ के पीछे चक्राकार सर्प की बनावट स्पष्ट और प्राकृतिक है। शायद इसकी चित्रकारी चालुक्य शासनकाल में कल्याण के समय हुई है।

पुदूर से भी बड़ा जैन केन्द्र नयाकल्लु था जो कर्नूल के दक्षिण में है। आज पूरा गाँव वास्तुकला के भग्नावशेष से भरा पड़ा है। इन प्रस्तर मूर्तियों के कुछ भग्न टुकड़े अवहेलना के प्रमाण हैं तो कुछ दीवारों में लगा दिए गए हैं। इनमें से कुछ का प्रयोग सिंचाई होने वाले कुएं में लगा हुआ है तो कुछ गाँव से दूर खेतों में फेंके पड़े हैं जिन्हें वापस लाना भी कठिन है। साँप के फन के नीचे कमल फूल पर खड़ी पाँच फुट लम्बी पार्श्वनाथ की मूर्ति एक ऐसे कुएँ के घेरे की दीवार में बनी हुई है जिस कुएं का पानी पीने के काम आता है।

पहाड़ी पर रायदुगम् में हम एक जैन मंदिर देखते हैं जो बदानु चालुक्य के शासनकाल में बना हुआ प्रतीत होता है। विजयनगर काल के बाद रायदुर्ग ख्याति के शिखर पर था, परन्तु इनमें बने जैन स्थापत्य उतने ही प्राचीन हैं जितना चालुक्य और राष्ट्रकूट का शासनकाल।

अंनन्तपुर के पश्चिम कम्बदुर में हमें तीन चरणों में कुछ मंदिरों के दर्शन होते हैं जिनमें एक जैन मंदिर है। अनन्तपुर जिले के धर्मपुरम से पश्चिम थोगरकुंत में एक पहाड़ी जैन मंदिर है। उसमें उत्कीर्ण लिपि से यह जानकारी मिलती है कि विक्रमादित्य-६ के पुत्र कुमार तैलप ने टोगरकुंत में चन्द्रप्रभ बसती के लिए जगह, बगीचे आदि दान स्वरूप दिया था। अनन्त जिले के दक्षिणी कोण में स्थिति अमरपुरम में तैल द्वितीय का अंतिम सैन्य शिविर था। तैलगिरि में उन्होंने एक किला बनवाया। बीजापुर जिले के इंगलेश्वर से कई जैन साधु तैलगिरि आए। अमरपुर के साधुओं ने ब्रह्म जैनालय का निर्माण

किया और एक प्रशिक्षण केन्द्र भी स्थापित किया। इरुणगोला की रानी अलुपादेवी ने (१२२६ ई०) कोट्टाशिवराम स्थिति एक बसदी को समय पर मरम्मत कराकर उसे नष्ट होने से बचाया।

पेन्नर नदी के तट पर तदीपरती में दो जैन मंदिर थे। इनमें एक चन्द्रप्रभ और दूसरा पार्श्वनाथ का था। चोल वंश का एक सरदार उदयादित्य का पूरे प्रदेश पर शासन था जिसकी राजधानी तलीपरपुर थी। उन्होंने मंदिर की मरम्मत तथा अष्टांग पूजोपचार के लिए उदारभाव से दान दिया। इसमें भोजन की व्यवस्था भी शामिल थी दुर्भाग्यवश आज वहाँ जैन धर्म से संबंधित कोई चिह्न विद्यमान नहीं है।

हैदराबाद से पूर्व की ओर वापस आते समय प्रोल ने इनुगुर्थी में जालंधर भैरव की एक मूर्ति स्थापित की। वहाँ एक जैन मूर्ति है शायद उसे भी उन्होंने ही बनवाया था। हनुमानकोंडा में उनके मंत्री बेताना की पत्नी मेलमा ने कदालय बसदी का निर्माण किया।

वारंगल किले में ही बने चार जैन मंदिर अभी तक विद्यमान हैं। इनमें से एक का नाम मेदरायगुड़ी है। संभुनीगुड़ी में बनी पार्श्वनाथ की मूर्ति अत्यन्त ही भव्य है। शायद काकतिया साम्राज्य की राजधानी बनने से पूर्व वांरगल किले का क्षेत्र जैन बस्ती था। तेलंगना क्षेत्र में ऐसे कई स्थान हैं जहाँ आदिकाल में कई जैन बसदी और मंदिर थे। तेलंगना अभिलेख के खंड-११ में ३५ ऐसे उद्धरण हैं जिनमें अंगभोग, नैवेद्य, दीप, धूप, ताम्बुल आदि के लिए दान दिए जाने का वर्णन है। ये उज्जिली किला के बद्धी जिनालय (महबूबनगर जिला के उज्जला) में स्थित चेन्ना पार्श्वदेव की सेवा हेतु थे। उसी पत्थर की दूसरी ओर एक दूसरा लेख १०९७ ई० के आसपास के समय का है जिसमें इन्द्रसेन पंडित को मंदिर की मरम्मत तथा सेवा के लिए दिये जानेवाले दान का वर्णन है। ग्यारहवीं शताब्दी में चालुक्य सामंतों के समय में उज्जिली मंदिर का निर्माण पश्चिमी चालुक्य शाखा ने करवाया था। कालान्तर में वीरशैव सम्प्रदाय ने इस मंदिर को अपने अधिकार में ले लिया और मंदिर स्थित मूर्ति के स्थान पर शिवलिंग स्थापित कर दिया। विविध प्रकार के लेखों की संख्या २ में यह उल्लेख है कि बेककल्लु के सरदार द्वारा निर्मित जैन मंदिर में पूजा तथा उसके अनुरक्षण के लिए एक जैन गुणसेन को काफी दान

मिला था। उसी अभिलेख की संख्या-३२ में १११९ ई० के कल्याणी चालुक्य का उल्लेख है। तदनुसार पेद्दा कादुमुरु स्थित पार्श्वनाथ की पूजा-अर्चना हेतु एक महामंडलेश्वर ब्रह्मेश्वरदेव ने भी दान दिया था।

उस समय तटीय आंध्रप्रदेश की राजनैतिक स्थिति काफी अव्यवस्थित थी। पश्चिमी चालुक्य राजा विक्रमादित्य ने वेंगी राज्य पर चढ़ाई कर उसे अपने अधिकार में कर लिया। उसे उन्होंने आजीवन अपने अधिकार में रखा। इस काल में जैनों ने समस्त तटीय अंचलों में पल्ली और बस्ती बना ली। मद्रास संग्रहालय की गोदावरी पार्श्वनाथ की मूर्ति संभवतः इसी काल की है।

वेलानतिचोडा काल : तटवर्ती आंध्र प्रदेश के सामन्तों ने पश्चिमी चालुक्य के विरुद्ध एक महासंघ बनाया। इसकी संगठित शक्ति ने ११३५ ई० में इनके साथ गोदावरी के तट पर भयंकर युद्ध किया और चालुक्य को खदेड़ भगाया। इस युद्ध का अधिनायक गोमक द्वितीय था। उसने अपनी राजधानी चंदभोल के आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया । वह अभी तक चोलों का सेवाधीन था, परन्तु शासक बन जाने पर उनसे मुँह मोड़ लिया और बिल्कुल स्वतंत्र रूप से शासनाधिकारी बना रहा। उसे जैन धर्म पर विश्वास था। मुनुगोडु स्थित पृथ्वीतिलक जैन बसादि के लिए उसने खुले दिल से दान दिया। उक्त जैन बसादि गुन्टुर जिले के सतनापल्ली तहसील में था। इस बसादि को गोमक द्वितीय ने स्वयं बनवाया। मुनुगोडु में किसी अग्नोतु द्वारा एक दूसरा जैन मंदिर भी बनाया गया था। इसके लिए गोमक द्वितीय के एक सामंत ने जमीन दान स्वरूप दी थी। राजधानी चंदभोल में बहुत जैन धर्मगुरु रहा करते थे। राजधानी के आसपास की सभी बसादि के सुधार का काम ये धर्मगुरु किया करते थे। इन लोगों ने तेनाली में भी एक बसादि बनाई।

दसवीं सदी से आगे तक तटीय क्षेत्र में गोदावरी और कृष्णा नदी के बीच कोनली सामंतों का शासन चलता रहा। उनकी राजधानी शशिपुर थी। इन शासकों ने ही अचन्त, पेनुगौडा, पेनुमानचिली, इचुरुपदु आदि जैन बसादि स्थापित की थी। अचन्त में ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित तीर्थंकरों की दो मूर्तियाँ यहाँ मिलती हैं। पेनुगोंडा के उत्तर में एक वर्गाकार तालाब है जिसे संभवतः जैन संप्रदाय के लोगों ने ही बनवाया था। इसके ईशान कोण (उत्तर पूर्व) में काले पत्थर की एक जैन मूर्ति भी उपलब्ध है जो पेनुगोंडा जैसे प्रसिद्ध जैन

स्थापना का अब एकमात्र ऐतिहासिक प्रमाण विद्यमान है। पेनुमानचिली में भी हरे पत्थर की बनी एक मूर्ति तीर्थंकर की है।

गोदावरी डेल्टा में हैहिया वंश का शासन था। गोदावरी डेल्टा के रक्सोल नामक भूभाग पर तातीपाक गांव में एक जैनी मूर्ति बैठी मुद्रा में है। पूरे गोदावरी जिले में तातीपाक जैन देव प्रसिद्ध हैं। गोदावरी डेल्टा के मध्य भूभाग में अमलपुर के पास नेदुमुरु नामक (नेमिनंदनुरु) गाँव में आज भी कुएँ खोदते समय जैन मंदिर या स्थापना की इंटें मिल जाती हैं। कहीं-कहीं तीर्थंकर की मूर्तियां भी पाई गई हैं। अत्रेयपुरम से लगभग दो मील की दूरी पर लोल्ला में एक महिला की प्रस्तर मूर्ति मिली है जो शायद अंबिका की है। पीठपुर में चालुक्य वंश के विजयादित्य ने ११५८ ई० में अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना लिया। उसकी माँ चंदला देवी हाहिया राजा ब्रह-मैय्या की पुत्री थीं। हाहिया राजा जैन धर्मावलम्बी थे। पीठपुर में जैनों की तीन मूर्तियाँ हैं।

गौतमी नदी के उत्तरी तट पर वेगयम्मापेट में जैन सम्प्रदाय की मूर्तियाँ मिली हैं। सिला, काजुलुरु, आर्यावतम् और कुच्चेरु में भी ऐसी मूर्तियाँ पाई गई हैं। अन्य जगहों पर भी मूर्तियां मिली हैं। इससे यह विदित होता है कि इस अंचल में कुछ शताब्दियों तक जैनियों का बोल-बाला रहा होगा।

काँकीनाड़ा के उत्तर समुद्र के पास नेमाम गांव है। ऐसा प्रतीत होता है कि कभी यहाँ कई जैन मंदिर रहे होंगे। ये मंदिर ईंट के बने थे। यहाँ आजकल जैनी मंदिरों की ईंटें काफी पाई जाती हैं। परन्तु अब यहाँ एक भी जैन मंदिर नहीं है।

उत्तर की तरफ कलिंग देश की ओर बढ़ते समय जैन धर्म से संबंधित कोई ऐतिहासिक प्रमाण की वस्तु नहीं मिलती है। हाँ, विजयानगरम् और भीमुनिपतनम् के बीच के मार्ग में कुछ ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक प्रमाण अवश्य मिलते हैं। ११८७ ई० में कलिंग के राजराजा अनंत वर्मा के शासनकाल से संबंधित मन्नाम नायक द्वारा निर्मित भोगपुरम में एक जैन मंदिर मिलता है। उस मंदिर में पार्श्वनाथ की स्थापना की गई और मंदिर का नाम राजरा जिनालय है।

आंध्र के सुदूर दक्षिणी अंचल में पहुँचने पर चित्तूर जिले के निन्द्र और नल्लथुर में हमें जैनियों की स्थापना के दर्शन होते हैं। ११६२ ई० में बिज्जला

के सामंत कलासूर्य ने कल्याण पर आक्रमण कर पश्चिमी चालुक्य राज्य सिंहासन को शिकस्त दी थी। बिज्जला और जैन सम्प्रदाय घुलमिल गए और छिप्पागिरि में रहने लगे। कलासुर्य ने छिप्पागिरि में एक जैन मंदिर बनवाया जो अभी तक है।

वीरशैवों का पराभव : बिज्जला ने अपने मंत्री के दामाद वासवेश्वर को राज्यकोष का कोषाध्यक्ष या खजांची के पद पर नियुक्त किया। वासवेश्वर शिव भक्त था। उसने विज्जला को मरवा दिया। इससे कल्याण में भयंकर गृहयुद्ध होने लगा। वासव तो भाग गया, परन्तु उसने जो द्वेष भाव की जड़ डाली थी उससे भयंकर संकट फैल गया। वीरशैवों ने हजारों जैनियों की हत्या कर दी और उनके वसादि को ध्वंस्त कर दिया। सिर्फ ओट्टाचेरुवु में ५०० वसादियों को उजाड़ डाला। पालकुरु के सोमनाथ कवि ने ऐसा उल्लेख किया है। कोलानुपाक में सभी जैन मंदिरों को तुड़वा दिया। जैन तीर्थंकरों का अंगभंग कर दिया या तोड़ डाला। अन्य स्थानों पर भी ऐसी ही घटना घटी।

दक्षिण भारत के जैनों का दर्शन, व्याकरण, भवन निर्माण, स्थापत्य कला साहित्य एवं मुद्रण के क्षेत्र में गौरवशाली अवदान रहा है। अपनी सहिष्णुता के कारण जैन सम्प्रदाय लगभग दस सदियों तक बना रहा। जैनियों ने शिवगंगा, आर्यवितम्, नेमाम, पेनुकोंडार (संभवतः), भोगपुरम, हनुमानकोंडा, वारंगल किला और कई अन्य स्थानों पर, जो तालाब खुदवाए वे आज भी हमारी सेवा कर रहे हैं।

श्रीचन्द्रराजचरित्र

पुत्र जन्म के समय का मंगल थाल स्त्रियों ने बजाया बधाइयाँ बांटी जाने लगी। सेठने सेठानी के गूढ गर्भ था-की बात चारों ओर फैला दी। लोग भी सुन-सुन कर बड़े प्रसन्न हुए। बाजे बजने लगे। स्थान-स्थान पर मंगल गीत गाये जाने लगे। भाट चारण याचकों की प्रशंसात्मक ध्वनि से सारी दिशायें गूंज उठी। हजारों सोने चाँदी के थाल-सजा कर फल-फूल मेवा-मिठाई आदि इधर-उधर भेजे जाने लगे। कुटुम्बियों, बन्धुओं, साधर्मियों का बड़ी ही श्रद्धा भक्ति और प्रेम से आदर करते हुए सेठ ने पुत्र जन्मोत्सव बड़े ठाठ से मनाया।

अंगुठी में अंकित मन पसंद नाम को देखकर सेठ ने सब लोगों के सामने–श्रीचन्द्रकुमार ऐसा उसका नाम संस्कार किया। इस प्रकार एक ओर राजकुमार संकटों को पार कर पुण्य के योग से सेठ के महल में नन्दन वन में कल्पवृक्ष के जैसे प्रतिदिन बढ़ने लगा। दूसरी ओर धनधान्य रत्न-सुवर्ण आदि लक्ष्मी से दिन दूना और रात चौगुना सेठ बढ़ने लगा। मणि-रत्नों के दिव्य-सुन्दर-खिलौनों से खेलता हुआ श्रीचन्द्रकुमार धीरे-धीरे चलने के लिए भी कदम उठाने लगा बन्धुजन उसको एक के बाद एक गोदी में लेते हुए नहीं अघाते थे। जिसके पास वह जाता था, उसी के सुख का कारण वह बन जाता था उसने कभी किसी वस्तु के लिए न हठ किया, न मुंह ही बिगाडा। सदा प्रसन्न रहने वाला वह कुमार जब पांच-वर्ष का हुआ तब उसमें बल-बुद्धि और तेजो-लक्ष्मी का संचार अपने आप होने लगा। एक बार सुना, देखा, ज्ञान-विज्ञान पहले अभ्यास की हुई विद्या के जैसे आसानी से ही उसे आ जाता था।

एक समय श्रीचन्द्रकुमार कौतुक देखने की इच्छा से अपने पिता के साथ रथ पर सवार हो उद्यान की ओर चला। फल फूलों से लदे हुए हरे भरे पेड़ों को संगमरमर से बने हौज, बावडियों को देखता हुआ वह घूम रहा था इतने में ही वह क्या देखता है—बाजे बज रहे हैं। खुले हाथों दान दिया जा रहा है। नाटक हो रहे हैं। हटो हटो की आवाज लगाते हुए छड़ीदार प्रजाजनों को हटाकर सड़क साफ कर रहे थे। सबके आगे हाथी पर राष्ट्रध्वज फरहा रहा

था। उसके पीछे कई तरह के बाजे बजाने वालों की टोलियां चल रही थी। सजे सजाये घोड़े चलते थे। घुड़सवार अमीर उमराव सामंत मन्त्री अपनी-अपनी राजकीय पोशाकों को पहने बड़ी आन बान और शान के साथ चल रहे थे। इनके पीछे मदमस्त चाल से चलता हुआ, खरेमोतियों की झालरों वाली झूल से सजा हुआ, सोने चांदी के गंगा-जमुनी हौदे को रेशम के रस्सों से कसा हुआ मनोहर चित्रकारी से कजाई हुई सूंडवाला माथे पर कानों में दांतों में, और पावों में सुनहले रत्न जड़ित आभूषण पहना हुआ गजराज जरीकी पोशाक पहने अंकुश लिये महावत से प्रेरित होता हुआ धीरे-धीरे चल रहा था। उसके हौदे में रानी की तरह आदर प्राप्त एक-सारिका बैठी थी। उसके सिर पर छत्र था। दोनों ओर दासियाँ चामर ढाल रही थीं। विस्मय पैदा करने वाली ऐसी सवारी को देखकर वह स्तंभितसा होकर सोचने लगा कि यह क्या घटना है?।

देखते-देखते वह सारिका हाथी के हौदे से उतर कर श्री आदीश्वर भगवान के भव्य मन्दिर में प्रविष्ट हुई। उसके पीछे पालकी से एक सुन्दर स्त्री उतरती है और वह अपने सेवकों को आज्ञा प्रदान कर रही है। पिता की आज्ञा से कुमार ने उसे पूछा कि–हे देवी! तुम कौन हो और यह पक्षी होती हुई भी मानवी के समान् आचरण करने वाली सारिका कौन है? भगवान् के मन्दिर में आने का व इस बड़े भारी इस ठाठ का वृत्तान्त अगर छुपाने योग्य न हो तो मैं सुनना चाहता हूँ।

कुमार की ओर ललचाई हुई निगाह से देखती हुई वह स्त्री कहती है कुमार! मैं महारानी सूर्यवती की मुख्य दासी हूँ। मेरा नाम सैन्द्री है। यह सारिका मेरी स्वामिनी सूर्यवती की परम-प्रेम-पात्र है। इसका जन्म कर्कोटक द्वीप में हुआ है। किसी जहाजी व्यापारी ने इसे महाराजा प्रतापसिंह को यहां भेट की थी। यह अपने ज्ञानी गुरु के प्रसंग से प्राप्त कला के द्वारा महाराज का मनोरंजन किया करती है।

कुमार! सुना होगा? महारानी को पुत्र वियोग का असह्य दुःख हुआ था। महाराज दुश्मन को जीतने गये थे। पत्र द्वारा दुःखद समाचार को पाकर महाराजा भी बड़े दुःखित हुए थे। उस समय महारानी के मन को शांत करने के लिये इस सारिका को महाराजा ने यहां भेजा थी। तब से यह महारानीजी

को समय-समय पर उपदेश देकर और श्री वीतराग की वाणी को सुनाकर धर्म ध्यान में प्रेरित करती है, और दुःख का समय काटने में साथ देती है।

इस सारिकाने किसी ज्ञानी गुरु से यह सुन रखा है कि तू राजकुमारी होगी, बस तब से ज्ञानी भगवान की वाणी पर श्रद्धा रखती हुई तीव्र तपस्या कर रही है महारानी जी के मना करने पर भी परम श्रद्धा से इसने आठ दिन के व्रत किये हैं। उसी का उद्यापन–निर्वाण समारोह करके रानीजी ने अपने जन्म को सफल माना है। इस प्रकार कह कर सैन्द्री रुक गई।

सैन्द्री की बात सुनकर श्रीचन्द्र-कुमार सारिका की प्रशंसा करते हुए बोला–अहो, इसकी निर्मल श्रद्धा वैराग्य और भाग्य सभी प्रशंसनीय हैं। तिर्यंच योनी में रहते हुए भी शुभ कर्मों का उदय होने से इसने धर्म की कितनी सुन्दर आराधना प्राप्त की है।

कुमार भी मन्दिर में पहुँचा। भगवान् को भाव पूर्वक नमस्कार किया। सारिका की क्रियाओं को कौतुक भरी दृष्टि से देखता हुआ वह वहीं पर ठहर गया। सारिका ने चोंचसे विधिवत् जल चंदन पुष्प आदि चढ़ाकर भगवान् की अष्ट प्रकारी पूजा की। स्तुति स्तोत्र और चैत्य-वन्दन करके भाव पूजा भी संपन्न की। बाद ज्यों ही मन्दिर में से रवाना होने के लिये वह घूमी त्यों ही अचानक उसकी दृष्टि उस दिव्य कुमार पर पड़ी। सुन्दर स्वरूपवाले उस कुमार को देखकर वह वापिस भगवान् श्री आदिदेव के चरणों में विनय-वंदन कर जोर से प्रार्थना करने लगी।

हे भगवन्? मैं आत्म-भाव से श्री वीतराग परमात्मा को देवरूप निर्ग्रन्थ महात्मा को गुरू रूप, और केवली भगवान् प्ररूपित विधि विधान को धर्मरूप मानती हूँ। यही सम्यक्त्व जन्म-जन्मान्तरों में भी आपकी दया से प्राप्त होता रहे और यह सुन्दर सुकुमार-कुमार ही मेरा स्वामी होवे। ऐसी प्रार्थना करके उसने अनशन व्रत ग्रहण कर लिया, और भगवान् श्री आदीश्वर के चरणों का ध्यान लगा कर वहीं बैठ गई।

यह सब देख सुन श्रीचन्द्र कुमार ने उस सारिका से कहा–मैना! तुम्हारा ऐसा करना उचित नहीं है। श्री जिनेश्वर देवने इस प्रकार से नियाणा-भावीफल की मांगणी-करने का निषेध किया है। ऐसा करने से जीव सद्गति से वंचित हो जाता है।

कुमार के ऐसे वचन को सुनकर सारिका कहने लगी हे कुमार! मुझे नियाणा-करने की कोई आवश्यकता नहीं है पर कुत्सित-स्वामी के मिलने पर सुचारु धर्म का आराधन नहीं होता। इस धार्मिक सहूलियत के विचार से ही मेरी यह प्रार्थना है-और मैंने आमरण अनशन कर लिया है।

सारिका की इस भावना से परिचित हो सैन्द्रीने महारानी सूर्यवती से सारिका के आमरण अनशन लेने की बात कही। तब वह घबराई हुई सी वहां आई, और उसने सारिका को ऐसा आमरण अनशन न लेने के लिये बहुतेरा समझाया। परन्तु उसने रानी को उत्तर दिया-स्वामिनि! मेरे लिये ज्ञानी गुरू की ऐसी ही भविष्य-वाणी है। उसी प्रेरणा से आज जो मैंने भगवान् श्री ऋषभदेव स्वामी के सामने जो प्रतिज्ञा की है, वह कभी मिथ्या नहीं होगी। अब आप कृपा करके इस कार्य में सहायक बनें। बस, इतना कहकर मैना मौन धारण करके स्थिर हो गई।

उसकी ऐसी धारणा को देख रानी गदगद स्वर से कहने लगी। प्रिय सखि! तेरे विना मेरे ये दुःख के दिन कैसे कटेंगे? मैं तेरे इस शुभ संकल्प को तुड़ाना नहीं चाहती। तेरा कल्याण हो। ऐसा कहकर रानी ने, सखियों ने और नगर निवासियों ने मिलकर अनेक प्रकार से उस अनशन की भारी महिमा की। तीन दिन के अनशन को करके सारिका ने अपने इस नश्वर-शरीर को त्याग दिया। रानी की आज्ञा से चंदन की चिता में उसका अंतिम संस्कार बड़े समारोह से हुआ रानी उसकी मृत्यु से शोक-संतप्त हो उसके महान गुणों को रह-रह कर याद करने लगी।

सब लोग सारिका के गुणों को याद करते हुए अपने-अपने स्थान पर चले गये। श्रीचन्द्र कुमार भी अपने पिता श्री लक्ष्मीदत्त सेठ के साथ चकोरों को प्रसन्न करने वाले चन्द्रमा के जैसे–अपने घर पर पहुँचकर अपने दिव्य गुणों से सबका मनोरंजन करने लगा।

कुशस्थल नगर में धीधन मंत्री के मतिराज और सुधिराज नाम के दो पुत्र थे। दोनों मंत्री-पद से विभूषित थे। छोटे भाई सुधीराज के कमला नाम की रूपवती गुणवती सती–पतिव्रता पत्नी थी। उसने गुणों के सागर रूप गुणचन्द्र नाम के पुत्र-रत्न को जन्म देकर अपने श्वसुर कुल में सन्मान प्राप्त किया था। मन्त्री-पुत्र गुणचन्द्र श्रेष्ठी-पुत्र श्रीचन्द्रकुमार के साथ पूर्व-जन्म के

पुण्य संस्कारों से अभिन्न-मित्र बन गया था। उन दोनों में क्षीर-नीर के समान घनिष्ठ प्रेम हो गया था। विनय विवेक–विचार–भक्ति और निस्वार्थ सेवा के गुणों से गुणचन्द्रने श्रीचन्द्र का मन अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था। दोनों परस्पर में परम विश्वासी और एक मन वाले थे।

श्री लक्ष्मीदत्त सेठ अपने चिरंजीवी कुमार श्रीचन्द्र को पुरुषों की बहत्तर कलाओं में निपुण देखना चाहते थे। संपूर्ण कलाओं की शिक्षा देने वाले कलाचार्य की खोज करते हुए उन्हें सद्भाग्य से गंगा तट की तरफ से यात्रा करते हुए श्री गुणंधर नाम के कलाचार्य की भेंट हुई।

श्री गुणंधर–उपाध्याय सब विद्याओं में पारंगत जितेन्द्रिय, स्पष्ट-वक्ता, शान्त स्वभाव वाले जैन दर्शन के अनन्य उपासक और बृहस्पति के समान सब शास्त्रों के ज्ञाता थे। अधिक क्या जितने गुण एक गुरु में होने चाहियें वे सब उनमें मौजूद थे।

लक्ष्मीदत्त सेठ की एक दिन अचानक श्रीगुणंधर उपाध्याय से मुलाक़ात हो गई। एक दूसरे के परिचय के बाद सेठ ने अपने पुत्र को पढ़ाने के लिये उनसे प्रार्थना की। उपाध्यायजी ने भी कुमार श्रीचन्द्र को विनयादि गुणों से संपन्न और सामुद्रिक शास्त्र के शुभ लक्षणों से युक्त योग्य–सुपात्र समझकर अन्यत्र जाने का विचार स्थगित करते हुए विद्या पढ़ाना स्वीकार कर लिया।

सेठ ने उपाध्याय को प्रसन्न करने के लिये धन देना चाहा पर उसने इस बात का निषेध करते हुए कहा सेठ उपकार के सामने धन क्या चीज है? मैं कोई तुच्छधन पर उच्च विद्या को न्योछावर करने वाला ओछा आदमी नहीं हूँ।

विद्या के बदले में विद्या देने वाले और धन से विद्या देने वाले दोनों लोभी कहलाते हैं। विनय से सन्तुष्ट हो मुफ्त में विद्या प्रदान करने वाले गुरू होते हैं। और वे ही सच्चे पुण्य के अधिकारी होते हैं।

उपाध्याय की उदारता और निस्पृहता से परिपूर्ण वाणी को सुनकर सेठ बहुत प्रसन्न हुआ। बहुमूल्य वस्त्रा भरणों से स्वागत करते हुए उपाध्याय से निवेदन किया कि हे मान्यवर! हम आपकी क्या सेवा करें? हम और यह कुमार सदा आपके आभारी रहेंगे। आप इसे पढ़ाना प्रारम्भ करें और इसे कलावान बनावें।

श्री गुणंधर उपाध्याय ने सेठ लक्ष्मीदत्त से कहा विद्याभ्यास एकान्त में निरुपद्रव ठिकाने पर ही ठीक होता है। अतः ऐसा स्थान खोजना चाहिये। तब सेठ ने कहा भूदेव! राजा की आज्ञा से मैंने लक्ष्मीपुर नाम का एक नगर बसाया है। वहां मेरे कई मकानात हैं। आप वहां पधारे और विद्याभ्यास के लिये योग्य स्थान निर्धारित करें।

आचार्य ने सेठ के साथ लक्ष्मीपुर में जाकर अपनी इच्छानुसार सुविधाजनक एक सुन्दर स्वच्छ और विशाल भवन विद्याभ्यास के लिये चुन लिया। स्थान का निश्चय हो जाने पर सेठ ने शुभ मुहूर्त्त में चन्द्रमा आदि का प्रशस्त विचार करके विद्याभ्यास के समस्त उपकरणों से उपयुक्त लेखशाला का निर्माण करा दिया।

उस विद्यालय में श्री गुणंधराचार्य की अध्यक्षता में शुद्ध-वस्त्रा भूषणों से सज-धजकर गुणचंद्रादि मित्र छात्रों के साथ श्रीचन्द्रकुमार ने बड़े भारी विनय भाव से–ओंकार के उच्चारण के साथ शिक्षा प्रारम्भ की। सेठ ने भी इस प्रसन्नता के उपलक्ष्य में उपस्थित छात्रों को बहुमूल्य वस्तुएँ प्रदान की।

श्रीचन्द्रकुमार गुणंधर उपाध्याय की एवं विद्या की उपासना इस प्रकार करने लगा कि उसे अल्पकाल में बहुतेरी कलायें प्राप्त हो गई। नम्रता के कारण सारे गुण अपने आप उसमें आकर रहने लगे। विद्यालय में बहुत से विद्यार्थियों के रहते हुए भी लोग उसी की ओर देखा करते थे। सच हे, आकाश में चन्द्रमा के रहते बेचारे तारों को कौन देखता है? श्रीचन्द्र केवल पढ़ने के लिये ही गुरू की उपासना नहीं करता थो, बल्कि उनके गुणों के प्रेम के कारण उनका तनिक समय के लिये भी विछोह सहन नहीं कर सकता था।

थोड़े ही काल में कुमार श्रीचन्द्रने लक्षण शास्त्र छन्दः शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र में निपुणता प्राप्त की। उसने साहित्य शास्त्र एवं गणित शास्त्र का गहरा ज्ञान प्राप्त कर लिया। सामुद्रिक शास्त्र, अश्वविद्या, शास्त्रार्थ-विद्या, आयुर्वेद, काल–ज्ञान, स्वरोदय–विज्ञान, रसायन-विद्या और नाट्यशास्त्र आदि सांगोपांग अभ्यास किया। रत्न-परीक्षा, गज-शिक्षा, लेखन-कला आदि विद्यायें विना किसी मेंहनत के जान ली। आचार्य ने अपनी संपूर्ण विद्याओं को कुमार के हृदय रूपी दर्पण में प्रतिबिम्बित कर दीं।

पुत्र की इस ढंग की पढ़ाई को देखकर सेठ फूला न समाया। उसका हृदय वांसों ऊंचा उछलने लगा। आनन्द की लहरों से लहराता हुआ वह

आचार्य के पास जाकर बोला–आचार्य मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आपने मेरे पुत्र को सभी शास्त्रों में पारंगत कर दिया। मैं और मेरा पुत्र कभी आपके इस उपकार–भार से मुक्त नहीं हो सकेंगे। मेरी आपसे एक और प्रार्थना है, कि आप इसे धनुर्वेद (अस्त्र-शस्त्र विद्या) का भी अभ्यास करा दें।

मैं विद्वान के साथ-साथ बलवान होना भी जरूरी समझता हूँ। दुश्मनों से, गुण्डों से देश की, समाज की और धर्म की रक्षा करने के प्रसंगों में केवल कलम चलाने वाला ही काफी नहीं होता। तलवारें भी उठानी पड़ती हैं। निर्बल आदमी दूसरों की रक्षा तो दूर, अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता। ऐसे कंगलों से उनके पूर्वजों की कीर्ति कथायें भी कलंकित होती हैं।

मैं अहिंसा मानता हूँ। आतताइयों के मुकाबले में उनसे हाथ जोड़कर प्राण बचा लेने या भाग जाने को मैं ठीक नहीं मानता हूँ। इस प्रकार की अहिंसा को मैं हिंसा ही मानता हूँ। अत्याचार करनेवाले हमेशा बुरे होते हैं। पर अत्याचारियों के अत्याचार को प्रतिरोधक शक्ति के रहते हुए चुपचाप सहन करनेवाले को मैं बहुत बुरा मानता हूँ। प्रसंगों के उपस्थित होने पर पुरुष को ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र सब कुछ होना चाहिये। ऐसा होने के लिये भी उस अवस्था के शस्त्रों का अभ्यास जरूर ही करना चाहिये।

इसीलिये आपसे मेरी प्रार्थना है कि श्रीचन्द्रकुमार को आप धनुर्वेद की ऊंची-शिक्षा देने की कृपा करें सेठ की इस बात को सुनकर श्रीगुणंधराचार्य ने बड़ी प्रसन्नता से कहा सेठ! आपकी इस भाव-भरी प्रार्थना से मेरा मन बहुत प्रसन्न हो रहा है। आप ठीक ही कहते हैं कि कायर कपूतों के होने से न होना ही अच्छा है। कहा भी है—

जननी जणे तो भक्त जण, कां दाता कां शूर।
नहीं तो रहिजे वांझणी, मती गमावे नूर।।

अब आपकी प्रेरणा से मैं श्रीचन्द्रकुमार को धनुर्वेद की–राधावेध पर्यन्त की सारी शिक्षा उच्च स्तर पर दूंगा।

उपाध्याय ने सेठ की प्रार्थना से प्रेरित हो दुगुने उत्साह से कुमार को शस्त्रास्त्र-विद्या में पूर्णतया निपुण किया। जल में तेल के जैसे कुमार की बुद्धि में पहुँचा हुआ गुरू का ज्ञान भारी विस्तार को पाया।

कुमार की शिक्षा पूर्ण होने पर एक दिन श्रीगुणंधराचार्य ने स्वदेश लौटने की अपनी इच्छा अपने शिष्य के प्रति प्रकट की। उस समय जैसे कोई

बड़ा भारी निधान कोई हठात् छीन लेता है। ऐसा दुःख कुमार के मन में उपस्थित हुआ। उसका खाना-पीना-सोना आमोद-प्रमोद सभी तो छूट गये। अपने लाडले बेटे की ऐसी हालत को देखकर सेठ लक्ष्मीदत्त पूछते हैं बेटा! क्या बात है? क्यों अनमने उदास हो रहे हो? क्या किसी वस्तु का अभाव मालूम देता है? क्या बात है? मैं तुम्हारे इस उदास चेहरे को देख नहीं सकता हूँ।

इस पर कुमार ने बड़े करुण स्वर में कहना शुरु किया पिताजी! आपने जो बातें फरमाई, उनमें से एक भी कारण मेरी उदासी का नहीं है। मेरे हृदय में ज्ञान प्रकाश फैलाने वाले आचार्य मुझे छोड़कर अपने देश की ओर प्रस्थान करने को कहते हैं। उनके वियोग-दुःख के विचार-मात्र से मैं दुःखी हूं। उनके बिना मुझे कौन नेक सलाह देंगे? कौन मेरे संशयों को दूर करेगा?

पिता पुत्र के बीच इस प्रकार का वार्तालाप हो ही रहा था, कि इतने में आचार्य भी वहां अपने घर जाने की अनुमति लेने आ गये। उन्होंने कुमार को जब इस अवस्था में देखा तो वे उसकी भक्ति, गर्वशून्यता, नम्रता आदि गुणों से प्रभावित हो उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे।

सेठ ने कलाचार्य का आदर करते हुए अपने शिष्य की हालत पर गौर फरमा कर कुछ समय तक और ठहरने के लिये प्रार्थना की। आचार्य ने भी प्रार्थना स्वीकार कर ली। यह देख श्रीचन्द्रकुमार का मन मन्दिर प्रसन्नता के प्रकाश से आलोकित हो गया।

वीर पुरुष की हुई प्रतिज्ञा को और प्रारम्भ किये हुए कार्यों को पूरा करके ही छोड़ते हैं। आनेवाली विघ्न-बाधाओं से उनका मन मूर्छित नहीं हुआ करता है।

महाराजा प्रतापसिंह ने अपने शत्रु रत्नपुराधिपति के साथ आठ वर्ष के घोर संग्राम के पश्चात् उसे हरा दिया। रत्नपुर पर अपना अधिकार जमा लिया। वहां अपनी विजय वैजयन्ती फहरा कर अपनी शासन-सत्ता स्थापित कर दी। बाद में अपनी विजय-वाहिनी-विशाल फौज के साथ निरन्तर प्रयाण करते हुए अपनी राजधानी कुशस्थलपुर में आ पहुँचे।

राज-मन्त्रियों ने महाराज की पधरावणी में नगर को खूब सजाया। सामंत-सेनापति-सभासद-सेठ साहुकार लोग महाराज के स्वागत में उनके सामने गये। नगर सेठ लक्ष्मीदत्त अपने पुत्र के साथ एक अपूर्व भेंट लेकर उनके सत्कारार्थ उपस्थित हुए। महाराज ने भी क्रमशः उपाधि और योग्यतानुसार सारे सामन्तों-मंत्रियों-नागरिकों के साथ हाथ मिला-मिला कर अभिवादन किया।

नगर सेठ लक्ष्मीदत्त के सर्वांग सुन्दर कुमार श्रीचंद्र के अनुपम आकर्षण से आकृष्ट हुए महाराज ने पूछा कि यह अद्भुत बालक कौन है? तब सेठ ने कहा महाराज! यह आपके सेवक का उत्तराधिकारी है। कुमार ने बड़ी बीरोचित वृत्ति का प्रदर्शन करते हुये, महाराज को विनीत प्रणाम किया। अपने पुत्र चन्द्र को देखकर समुद्र जैसे उमड़ता है ठीक उसी प्रकार महाराज प्रतापसिंह भी श्री चन्द्रकुमार को देखकर अन्तरंग स्नेह से आन्दोलित हो उठे। उन्होंने उसे ताजिम के साथ कणकोट्टपुर की जागीर वक़्शीश कर दी। दूसरों को भी यथायोग्य पुरस्कार दान किया। महाराजा अपने महल में चले गये। जरूरी कामों को निपटाते हुए सुख से आराम करने लगे।

इधर श्रीचन्द्रकुमार का विद्याभ्यास सर्वतो-भावेन पूर्ण हो गया। गुणंधर गुरू ने उसे प्रेमपूर्वक शस्त्र-धारा को बांधनेवाली दिव्य जड़ी प्रदान की और वे स्वदेश लौट गये। संपूर्ण कलाओं में कुशल कुमार कामदेव के समान सुन्दर रूपवान नवजवान हो गया। कुशस्थल में रहने वाले धनप्रिय, धनमित्र आदि व्यापारी सेठों ने अपनी धनवती लक्ष्मी आदि आठ कन्याओं का सम्बन्ध कुमार से करना चाहा। लक्ष्मीदत्त सेठ ने उनकी प्रार्थना से प्रेरित हो अपने कुल के योग्य उन कन्याओं को जानकर बड़ी धूमधाम से कुमार को परणा दिया। कलाओं से चन्द्रमा के समान वह उन पतिव्रता गुणवती पत्नियों को पाकर विशेषतया सुशोभित हुआ।

कमला कमल को छोड़कर कुमार के कर कमलों में आवसी। चन्द्र अपनी क्षीणता को मिटाने कुमार के मुख में लीन हो गया। हमेशा चन्द्र के उदय से कमल संकुचित और श्री हीन रहेगा ऐसा समझ कर श्री कुमार के नाम के अग्रभाग में रहने लगी। अन्तर्निहित गुण रूप रत्नों से कुमार रोहणाचल पर्वत के समान गौरव पाया। विबुधों से सेवित ऐश्वर्य संपन्न इन्द्र के समान कुमार सब की आंखों को आनन्द देने वाला हुआ। सुमेरु के समान धीर, सागर के समान गंभीर-गुणी श्री चन्द्रकुमार सर्वत्र सत्कार पाता हुआ भी भगवान् श्री जिनेश्वर देव के शासन का अनन्य अनुरागी सेवक बना रहा। नित नये कवीश्वर नित नयी कविताओं द्वारा उसकी यशोगाथा गाया करते थे। दान पुण्य से प्रेरित उसकी लक्ष्मी दिन-दुणी रात-चौगुणी बढ़ती जाती थी। दुर्जनों को उसकी पुण्य-लीला खटकती थी। कई बार सेठ

लक्ष्मीदत्त के कान भरे जाते थे। पर सेठ सुनी अनसुनी करके कुमार के प्रति अपने स्नेह भाव को बनाये रखता था।

एक दिन अपने अभिन्न मित्र गुणचंद्र को साथ लेकर श्रीचन्द्र कुमार हवाखोरी के लिये उपवन में गये। वहां उसने तालाब के किनारे डेरे डाले हुए घोड़ों के सौदागरों को देखा। उनके पास शोभा और चंचलता में सूर्यरथ के घोड़ों को भी मात करने वाले अद्भुत घोड़ों को देखा। अपने अभिन्न मित्र को प्रेरित करते हुये कुमार ने कहा प्रिय मित्र! इन व्यापारियों से इन घोड़ों का मूल्य तो पूछो। गुणचंद्र ने मित्र के कथनानुसार घोड़ों का मूल्य पूछा तब एक वृद्ध व्यापारी ने कहा आज तक हमने बहुत घोड़े बेचे हैं, लेकिन ये सोलह घोड़े बहुत ही उत्तम जाति के और बेशकीमती हैं।

इस बात को सुनकर कुमार घूम-घूमकर एक-एक घोड़े को देखने लगा। मित्र के पूछने पर उसने उन घोड़ों की जाति और गुणों का वर्णन बड़े पाण्डित्य-पूर्ण-ढंग से किया। वह कहने लगा, मित्र! मुख चरणों में सफेद रंग वाला यह अष्ट-मंगल-जाति का अश्व है। लालवर्ण का किराह, और श्याम रंग का खुगाह जाती का है। घी की कांति के समान सुन्दर यह सराह जाती का, और यह कबरे रंगवाला हलाह जाति का घोड़ा है। यह सब घोड़ों में श्रेष्ठ उराह जाति का अश्व है। हल्के पीले रंग का और काले घुटनों वाला यह बड़ा ही वेगवान कुलाह जाति का है। कुछ लाल कुछ पीला काले घुटनोंवाला यह रोकनाह है। यह होलक, और यह हरिक जाति का घोड़ा है। ये दोनों पंचभद्री जाति के अश्व हैं। ये सबसे अधिक वेगवान हैं। इनके हृदय मुंह और बाजुओं में भँवर पड़ते हैं। ये दोनों सुंदर लक्षणों से संपन्न हैं। दिखने में पतले दुबले दिखनेवाले ये घोड़े लाख-लाख देने पर भी मिलने मुश्किल हैं।

इतने में वहां कई राजकुमार और राजवर्गी लोग आते हैं, और अपनी-अपनी पसंद के कोई पचास, कोई सत्तर, और कोई पचहत्तर हजार रुपया दे देकर घोड़े ले जाते हैं। श्रीचंद्रकुमार भी वायुवेग और महावेग नाम के पंचभद्रजाति के पतले दुबले दिखनेवाले दो घोड़ों को दो लाख रुपये देकर खरीद लाया।

दुर्जनों की बन आई, उन्होंने लक्ष्मीदत्त सेठके कान भर दिये कि सेठ! देखो तो आपके घर की लक्ष्मी किस कदर कचरापट्टी के घोड़ों की खरीद में

बहाई जा रही है। आपके धनघेले बेटे को कुछ होश हवास नहीं है। अगर ठीक प्रबन्ध न किया तो आपको भीख मांगनी पड़ेगी। दूसरे लोगों ने जहां मोटे ताजे तगड़े घोड़ों की कीमत थोड़ी दी है वहां आपके इस कुमार ने पतले दुबले घटिया दर्जे के घोड़ों की कीमत लाख लाख रुपया देकर चुकाई। उसमें भी तुर्रा यह कि आप को पूछा तक नहीं। अरे बाबा! आपको वह कुमार तिनके के बराबर भी कब मानता है? हम तो आपके हित के लिये कहते हैं कि सावधान हो जाओ। नहीं तो बुढ़ापे में तकलीफ उठानी पडेगी। वह बेटा किस काम का जो बाप की आज्ञा न माने। इस कार्य के लिये उसे उचित शिक्षी जरूर दीजिये तभी ठीक होगा।

यह सब सुनकर सेठने उन लोगों को डांटते हुए कहा–अधिक बकवास मत करो। यह जो कुछ ऋद्धि सिद्धि है वह इसी के पुण्यों का प्रताप है। वह चाहे जितना धन खर्च करे, कर सकता है। उस भाग्यशाली के धन की कमी कभी न होगी। सेठ की इन बातों से वे विघ्न-संतोषी चलते बने, और कहते गये सेठजी! हमने तो आपके भले के लिये ये बातें बताई थी न मानो आपकी मरजी है।

इधर कुमार घोड़ों को लेकर आता है, और सेठ से निवेदन करता है, कि पिताजी! दो लाख में ये दो घोड़े लाया हूँ। **बहुत अच्छा किया** इस प्रकार कहते हुए सेठ ने उसे स्नेहामृत से सिंचन किया। बाद में पिता की आज्ञा लेकर गारुडी मणियों से जड़ा हुआ सुवेग नाम का एक सुन्दर रथ तैयार करवाया। उसके लिये कुल क्रमागत रथ हांकने की विद्या में निपुण धनंजय नाम के सारथी को नियुक्त किया।

एक दिन सुमुहूर्त्त में उन दोनों घोड़ों को रथ में जोत कर उनकी ढाल और स्वभाव की परीक्षा के लिये कुमार अपने मित्र के साथ किसी एक दिशा को लक्ष्य करके बड़े वेग से चला। घोड़े इतने वेग से दौड़े कि रथ में बैठे तीनों को पेड़, पहाड़, नदी, नाले सब दिखाई दिये। प्रत्येक वस्तु आंखों के सामने आने के साथ ही उसी क्षण में आंखों से ओझल हो जाती थी। इस प्रकार आधे प्रहर में कोई पनरह योजन–साठ कोस तक चले गये। वहां विश्राम कर वापस उसी वेग से लौट आये।

इस प्रकार श्रीचन्द्रकुमार हमेशा अपने मित्र के साथ रथ में बैठ अपनी इच्छानुसार नये-नये पहाड़ों वनों और प्रदेशों आदि को देखता हुआ

अपना मनोरंजन करने लगा। दूर-दूर चले जाने पर देरी से आये हुए कुमार को सेठ ने एक दो बार प्यार भरे शब्दों में कहा बेटा! तुम्हारे दूर चले जाने से देरी से आने से तुम्हारे विरह में हमारा मन जल बिना मछली के जैसे तड़फता है। बड़े विनीत भाव से कुमार हाथ जोड़कर अपने पिता से कहता है पूज्य पिताजी! क्या बताऊं रथ में बैठे बाद स्वतन्त्रता के साथ घूमने में जो आनन्द आता है उसको छोड़ने में मेरा मन भी बहुत दुःख पाता है। पर अब मैं जल्दी आने की चेष्टा करूंगा।

पुत्र के विनीत वचनों के सुनकर सेठ गद्गद् होता हुआ कहता है बेटा! यदि ऐसा है तो जिस प्रकार तुम प्रसन्न हो वैसा ही करो। मैं तो तुम्हारे दुःख में दुःखी और तुम्हारे सुख में सुखी हूँ। मेरी ओर से तुम्हारी क्रीड़ाओं में आज से कोई बाधा न होगी।

पिता की आज्ञा को पाकर कुमार बहुत प्रसन्न हो गया। एक रोज वह त्रिकूट पर्वत की शोभा देखने गया। वहां पद्मासन लगाये हुए किसी भैरव नाम के योगी को ध्यान करते हुए देखा। कुमार ने योगी को नमस्कार किया। उसके गुणों से और लक्षणों से प्रसन्न होकर योगी ने उसे कहा बेटा! तुम अभी छोटे हो इस डरावने जंगल में अकेले कैसे आये हो?।

कुमार ने कहा योगिराज! मैं मनोरंजन के लिये घर से निकलता हूं। आप जैसे महात्माओं की दया से मुझे कहीं कोई भय नहीं होता है।

योगी ने कुमार की वीरवाणी को सुनकर कहा कि भाग्यशाली मुझे कोई मंत्र सिद्ध करना है, आज अर्धरात्रि के समय तुम मेरे उत्तर साधक बन सकोगे क्या? कुमार ने बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार कर लिया। योगी ने अपनी साधना कुमार के उत्तर साधकत्व में की। मंत्र जाप आहुति आदि से वह सफल मनोरथ हो गया। उसने मधुर स्वर में कहा कुमार! मैं तुम्हारे साहस से सन्तुष्ट हुआ क्षुद्र प्राणियों को अन्धा बनाने वाली यह दिव्य जड़ी देता हूँ। तुम इसे ग्रहण करो। एक बात और कहता हूं, आगे से तुम कभी किसी योगी का विश्वास मत करना।

क्रमशः

संकलन

साधना का उद्देश्य :

साधना क्या है? उसका ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य क्या हो? उसकी प्राथमिकताएं एवं पात्रता के मूल मापदंड क्या हो? सिद्धांतों एवं अन्य सिद्धान्तों के पालन में किसको कितना महत्त्व दिया जाय? परिस्थियों के वश कभी दोनों में से एक को प्राथमिकता देना हो तो किसको देने का विवेक रखा जाये? ब्राह्म एवं भाव साधना में किसको प्रमुखता दी जावे, जब तक इन प्रश्नों का सद्विवेकपूर्ण समाधान नहीं होता, तब तक साधना में सहायक तत्वों का कैसे मूल्यांकन किया जावे?

राग-द्वेष कम कर समत्व अथवा वीतरागता को प्राप्त करना ही सभी साधकों की साधना का परम लक्ष्य है। नर से नारायण बनना एवं आत्मा से परमात्व पद को प्राप्त करना ही साधना का उद्देश्य है। कषायों की मन्दता, सरलता एवं अन्तर बाह्य की एक रूपता, प्रमाद की कमी तथा आत्मीय गुणों को प्रकट कर निजस्वभाव में रहना ही साधना की सफलता का मापदण्ड है। आश्रवों से बचते हुये, संवर निर्जर का आलम्बन लेते हुए तनाव मुक्त हों, पूर्व संचित कर्मों को समभाव पूर्वक क्षय करना ही साधना का क्रमिक विकास है।

जो साधक इन मापदण्डों को स्वीकारते हैं, बाह्य के साथ-साथ भाव साधना में आगे बढ़ते हैं, उनका जीवन दिन-प्रतिदिन लक्ष्य की तरफ बढ़ता जाता है, परन्तु जो क्रिया काण्डो, पूर्वाग्रहों का मायावी आचरण करते हैं, उन्हें लेखा जोखा करना होगा एवं कम से कम धर्म के नाम पर होने वाली मायावृत्ति एवं राग-द्वेष की प्रवृत्ति त्यागने का अथवा कम करने का प्रयास करना होगा तब ही हम साधना के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

तित्थयर वर्ष २६
अक्टूबर २००२ से मार्च २००३

निबन्ध

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
१. वैदिक धर्म और जैन धर्म	पं० दलसुख मालविया	३
२. कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनिजी	१७,५१,९९,१४७, १९५,२४३,२९१,३३९, ३८७,४३५,४८३,५३१
३. पटना का सक्षिप्त विवरण		२७
४. पाटलिपुत्र का इतिहास	प्र० यति श्री सूर्य्यमल जी	६२,११०,१५८, २१६,२५६,३११
५. जैन धर्म का मूल आधार अहिंसा	श्री पृथ्वीराज जैन	७४,१२४,१६२,२१२
६. जैन दर्शन में पुनर्जन्म की मान्यता	श्रमणी मंगल प्रज्ञाजी	११९,१६७,२०७
७. आत्मा की खुराक-सामायिक	श्री प्रकाश गुन्देचा	२२४
८. जगत के सभी प्राणी सुखी हो	श्री रमाकान्त जैन	२५४
९. परमात्मा पार्श्व व धरणेन्द्र-पद्मावती	ललितकुमार नाहटा	३०७
१०. तमिलनाडू में जैन धर्म		३४३,३९५,५४०
११. आंध्र प्रदेश में जैन धर्म		४९२

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
	कथानक	
१२. कुण्डकौलिक श्रावक	श्री नरेन्द्र सिंह जैन	३५१,४००
१३. राजर्षि प्रसन्नचन्द्र	श्री नरेन्द्र सिंह जैन	३५१,४४४
१४. श्री चन्द्र राजा चरित्र	पं० काशीनाथ जैन	३६२,४१०,४५२, ५००,५४६
१५. संकलन		४६३,४६४,५६०
१६. समाचार		२७०,२७२
१७. पुस्तक समीक्षा		२७२

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
7/B Metro Palaza, 1 Ho-Ch-Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 2220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Kolkata - 700 026
Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 2244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/2405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA RARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 2235 5009/1299, (R) 2660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2270 0216, (R) 2235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 2238 7764, (R) 2666 4541, 2530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 2242-2345, 2242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2232 6040, (R) 2684181 ?

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 2238 3328/9678, 2239 3450
Fax : 2239 3450, 2247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

S. VIJAY CHAND
Vijay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2238 1388 (R) 2247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 2220-6400 Ph: 2220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007
Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/9181, (O) 2238-1396/1871
Fax : 2231-2151, 2666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-4779/0131/5721

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

MANIK CHAND MANOJ KUMAR
11, Clive Row, 3rd Floor, Room No. 4,
Kolkata - 700 001, Phone : 2242-4131/4756

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C.
Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27 2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8 2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with
   English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3- 6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7- 8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9- 11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda
   Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee-
   Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee
   Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee
   Introducing Jainism — Price : Rs.

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn)
   Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjanā, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti
   Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 50.00

5. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6. Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7. Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8. Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9. Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10. Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11. Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1. Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2. Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3. Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4. Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5. Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6. Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7. Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1. Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2. Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3. Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4. Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5. Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6. K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1
Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi
******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)
******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE:
SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

M.M. & P.D./W.B./R.N.P.-45/2003
Vol. XXVI No. 12 TITTHAYARA 2003
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225